23 छड़ी वाला लड़का

(जैसा उन्होंने नताशा किणी को बताया)

चिक्करंगप्पा

काई आठ साल पहले अगर किसी ने मुझसे यह कहा होता कि एक दिन मैं देश का सबसे बेहतरीन गोल्फर बनूँगा, तो मैं हँस देता। बंगलौर के पास एक छोटे से गाँव (रांगेगौदन्ना डोड्डी) के एक ग़रीब परिवार में पैदा होने और पलने–बड़े होने के चलते एक पेशेवर गोल्फर होने का सपना देखना भी मेरे बस की बात न थी।

गोल्फ से मेरा पहला परिचय हमारे गाँव के नजदीक ईगल्टन गोल्फ रिसोर्ट में हुआ। मुझे लगा गोया यह हॉकी का ऐसा कोई खेल था जिसमें ज्यादा दौड़–भाग नहीं करनी पड़ती। मैंने जब अपने दोस्तों से इस खेल के बारे में पूछा तो जो कुछ भी उन्हें मालूम था उन्होंने मुझसे साझा किया। इसके साथ ही वे एक चीज जोड़ना नहीं भूलते थे कि ''यह खेल गरीबों के लिए नहीं है।'' लेकिन इस खेल ने मुझे मोहित कर लिया था और मैं इसके बारे में जानने को सदा बेताब रहा करता था।

कौतूहल शायद सर्वोत्तम धन है। मेरी उत्सुकता मुझे गोल्फ कोर्स पर बॉल बॉय की नौकरी तक ले आई। कोर्स (गोल्फ मैदान) पर घण्टों बिताने के दौरान वहाँ दी जाने वाली तमाम हिदायतें और युक्तियाँ मेरे कानों में भी पड़ा करतीं, हालाँकि भाषा न जानने के चलते मैं कुछ भी समझ न पाता था। धीरे–धीरे मैं एक के बाद एक सीढ़ियाँ चढ़ता गया और एक दिन कैडी (गोल्फर का बल्लावाहक) का काम करने लगा। फिर क्या था! सब कुछ बदलना शुरू हो गया।

खिलाड़ियों की तैयारी और शैली देख–देखकर मैंने गोल्फ–कोर्स के किनारे खेलना शुरू कर दिया। सप्ताह में काम के दिनों में मैं लकड़ी की उस गोल्फ–स्टिक से खेलता जिसे मैंने अपने गाँव के खेतों में अपने हाथों से बनाया था। फिर एक दिन, मेरे वर्तमान कोच विजय दिवेचा ने मुझे मैदान में ही कुछ शॉट्स आजमाते हुए देख लिया और कहा कि मेरा स्विंग अच्छा है, मुझे इस खेल को गम्भीरता से लेना चाहिए। उनका सुझाव सच्चे मन से दिया गया था लेकिन मेरे लिए उस पर अमल करना नामुमकिन था क्योंकि मैं जानता था कि यह 'अमीर आदमी' का खेल है। इससे तो मुझे दूर ही रहना था, क्योंकि यह मेरी हैसियत के बाहर की चीज थी। लेकिन विजय सर तो यह सब सुनने–मानने को तैयार ही नहीं थे। इस खेल में मेरी रुचि देखते हुए उन्होंने ईगल्टन गोल्फ रिसोर्ट की समिति को राजी कर लिया कि पेशेवर स्तर पर गोल्फ खेलने की सम्भावनाएँ तलाशने में वे मेरी मदद करें। उस वक्त मेरी उम्र लगभग दस बरस थी – शानदार स्विंग मारने वाला एक गरीब लड़का, गोल्फ खेलने में जिसकी मदद करने के लिए ईगल्टन गोल्फ रिसोर्ट पर एक मार्गदर्शक देवदूत की तरह आ गया था।

तब से ईगल्टन गोल्फ रिसोर्ट का मेरे जीवन पर बहुत प्रभाव रहा है। वहाँ के लोगों ने मुझे तब से हर तरह का सहारा दिया है जब मैं ''लकड़ी की छड़ी वाला गाँव का लड़का था।'' उन्होंने कभी भी अपने व्यवहार से मुझे यह नहीं जतलाया कि उनकी भाषा तक नहीं समझ पाने वाला मैं एक अदना सा कैडी (बल्ला ढोने वाला) भर हूँ।

मेरी प्रतिभा देखकर विजय सर ने मुझे एक पेशेवर गोल्फर बनने का सुझाव दिया था। मुझे नहीं पता था कि इस पर अपनी क्या प्रतिक्रिया दूँ – मुझे खुशी इस बात की थी कि अपना पसन्दीदा खेल खेल पाऊँगा और डर इस बात का था कि मेरे घर वाले शायद इतने खुश न हों। मेरे घर वालों को लगता था कि मैं गोल्फ कोर्स पर काम करके जो पैसे कमाता हूँ उस पैसे से मेरी पढ़ाई का खर्च पूरा हो सकता है। लेकिन मेरा गोल्फ खेलना उनके लिए दूर की कौड़ी थी। घर आकर जब मैंने अपनी माँ को बताया कि मुझे वहाँ खेलने का मौका मिला है और मैं शायद पेशेवर स्तर पर भी गोल्फ खेल सकता हूँ, तो मेरी माँ ने बड़ी कड़ाई से मुझे गोल्फ खेलने की बात भूल जाने को कहा। वे इतनी नाराज हो गई थीं कि मुझसे बात भी नहीं करती थीं। नतीजतन, मैं वापस रिसोर्ट गया और जाकर कह दिया कि मेरे घर वालों को मेरा गोल्फ खेलना मंजूर नहीं है, सो मैं गोल्फ नहीं खेल पाऊँगा। लेकिन वहाँ काम करते–करते छिप–छिप कर गोल्फ खेलने से मैं अपने आपको रोक नहीं पाया। मैंने अपनी माँ को इस बात की जरा भी भनक नहीं लगने दी कि मैं फिर से गोल्फ खेलने लगा हूँ, और इस तरह धीरे–धीरे मैंने रोजाना गोल्फ खेलना

जारी रखा। एक दिन मैं पकड़ा गया। मेरे एक रिश्तेदार ने मुझे गोल्फ खेलते हुए देखा और उसने जाकर मेरी माँ को कहा कि मैं उनकी अवहेलना कर रहा हूँ। बस फिर क्या था! मेरी माँ तो उबल पड़ीं!! वे चिल्लाने लगीं कि यह खेल अमीर लोगों के लिए है, और मेरा काम है कि खेलना–वेलना छोड़ चुपचाप पढ़ूँ–लिखूँ और अपनी डिग्री हासिल करूँ। आँसुओं और तू–तू–मैं–मैं के बीच मैंने एक साल के लिए अपनी पढ़ाई से छुट्टी माँगी ताकि मैं एकाग्र होकर अपना खेल खेल सकूँ। साथ ही मैंने यह भी घोषणा कर दी कि इस एक साल में यदि मैं कुछ खास न कर पाया तो फिर मैं उम्र भर के लिए खेल को भूल जाऊँगा और फिर बस अपनी पढ़ाई और अपने काम में मन लगाऊँगा। मुझे नहीं मालूम कि मेरी घोषणा के कारण या फिर मेरे हठ के चलते मेरी माँ का दिल पसीजा, लेकिन अन्ततः मुझे एक साल की छुट्टी देने के लिए वे राजी हो गईं। उस दिन मुझे ऐसा लगा जैसे मैं 'इस धरती का राजा' हो गया हूँ। घर वालों की सहमति और उनका समर्थन मेरे लिए बहुत मानी रखते हैं। मेरी माँ अगर मुझे लगातार खेलने से रोकती आतीं तो फिर मेरे लिए खेलना जारी रखना सम्भव न होता और मैं वह चैम्पियन न होता जो मैं आज हूँ।

ऊटी में हुए मेरे पहले टूर्नामैण्ट में मैं दूसरे स्थान पर रहा। मेरी उस जीत ने सबको हैरत में डाल दिया। तब मुझे लगा कि हो सकता है कि मैं वाकई एक अच्छा गोल्फ खिलाड़ी हूँ और लगता है कि आगे चलकर मैं कुछ न कुछ तो पा ही लूँगा। अपने अगले टूर्नामैण्ट में देश के कुछ सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों से मेरी होड़ थी। वह टूर्नामैण्ट मैंने खलिन जोशी को हराकर जीत लिया। खलिन की गिनती उस वक्त देश के सर्वोत्तम खिलाड़ियों में होती थी और आज वे मेरे एक अच्छे मित्र हैं। हर व्यक्ति इस बात को लेकर भौंचक और आश्चर्यचकित था कि मेरे अन्दर सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को मात देने की प्रतिभा थी। उस जीत से मिले आत्मविश्वास ने अगली प्रतियोगिताओं में मेरा भरपूर साथ दिया।

प्रत्येक प्रतियोगिता के बाद मैं इत्मीनान से बैठकर अपनी वह डायरी बाँचता जिसमें मेरी हर जीत के बाद मैं अपनी टिप्पणी दर्ज करता आया था। और मैं चकित रह जाता – लगता कि कोई सपना देख रहा हूँ! मेरा सबसे बड़ा सपना था खलिन के विरुद्ध खेलना और उसे हराना। इसके बाद तो मुझे लगने ही लगा कि मुझे राष्ट्रीय स्तर पर खुद को आजमाना चाहिए और अब से ऊँचे स्तर पर खेलना चाहिए।

अपना पहला राष्ट्रीय टूर्नामैण्ट मैंने मुम्बई में खेला। उस समय मुझे न हिन्दी आती थी, न अँग्रेजी, जो मेरे लिए अच्छी बात न थी। मैं तो कैडीज तक को नहीं समझ पाता था जो मुझे खेल के बारे में कुछ बताने की कोशिश कर रहे होते थे। भाषा न आने के अलावा मैं बहुत संकोची भी था और अभ्यास के दौरान डरा–सहमा रहता था क्योंकि वह एक राष्ट्रीय टूर्नामैण्ट था। जिस मैदान पर मैं खेल रहा था उस मैदान पर भारत के कुछ सर्वश्रेष्ठ गोल्फ खिलाड़ी खेल रहे थे – भयभीत कर देने वाला था वह माहौल। लेकिन मैं टूर्नामैण्ट जीत गया! हाँ, सही में जीत गया! मेरा पहला राष्ट्रीय खिताब तो वह था ही, उसने मेरा आत्मविश्वास भी कई गुना बढ़ा दिया। उस दिन मैंने अपने आपसे कहा – दुनिया चाहे इधर की उधर हो, मैं दुनिया का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी बनना चाहता हूँ।

टूर्नामैण्ट पर टूर्नामैण्ट जीतते जाने के चलते मेरे माता–पिता को भी इस खेल में रस आने लगा। नतीजतन, अब वे मुझे ''कड़ी मेहनत करने, अपने ऊपर विश्वास रखने और कड़ा अभ्यास करने'' की सलाह देने लगे जबकि इसके पहले वे इस खेल का 'क, ख, ग...' भी नहीं जानते थे। विभिन्न टूर्नामैण्टों में चोटी के तीन खिलाड़ियों में मेरा नाम होने के नतीजतन मेरी उपलब्धियों का हिस्सा बनने से उन्हें अब कोई गुरेज नहीं रह गया था। अखबार की सुर्खियों में मेरा नाम या मेरी तस्वीर देखने पर वे गौरवान्वित महसूस करते। रिश्तेदार और गाँव के लोग घर आकर मेरे घर वालों को बधाई देते और इस बात

पर खुश होते कि मैंने इतना कुछ हासिल कर लिया है। इस बात से मुझे भी खुशी मिलती है क्योंकि अब मुझे दिखता है कि मेरी उपलब्धियों से मेरे माता–पिता को वाकई कितना फख्र महसूस होता है।

ऐसे बहुत से प्रतिभाशाली बच्चे हैं जो बड़े घरों से नहीं हैं। फिर भी वे अपना नाम कमा लेते हैं। अब मेरे आदर्श सचिन तेंदुलकर को ही लीजिए। उन्होंने अपनी शिक्षा भी पूरी नहीं की थी, लेकिन फिर भी दुनिया के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटर बने। यहाँ तक कि प्रवीण कुमार और विनय कुमार भी अमीर घरों से नहीं आते, फिर भी उन्होंने क्रिकेट में अपना एक मुकाम बना लिया है। जो बच्चे खेलों (गोल्फ ही नहीं, किसी भी खेल) में अपनी रुचि दिखाते हैं, उन्हें वह सब करने देना चाहिए जो वे करना चाहते हैं। अब चूँकि मैं उस मुकाम पर हूँ जहाँ से मुझे बस अब आगे ही आगे जाना है, मैं अपने गाँव के प्रतिभाशाली बच्चों की तलाश में रहता हूँ। मैं उन्हीं लोगों को सिखाना चाहता हूँ जो वाकई खेल में रुचि रखते हैं और दिल से सीखना चाहते हैं। उनके पास कोच तो नहीं है, लेकिन मैं उन्हें गोल्फ की बुनियादी बातें, बारीकियाँ सिखाना चाहूँगा। मेरा अन्तिम ध्येय यही होगा कि कम से कम एक खिलाड़ी तो मुझसे बेहतर बने!

गोल्फ के खेल ने मेरा जीवन ही बदल कर रख दिया है। अब मैं एक 'जैण्टलमैन' बन गया हूँ और सार्वजनिक जीवन में कैसे पेश आना चाहिए, यह इल्म मुझे हो गया है। सामाजिक सलीका आ गया है। ढंग के कपड़े पहनना भी अब मुझे आ गया है। भाषा का कौशल भी मैंने सीख लिया है और अब मैं हिन्दी और अँग्रेजी, दोनों भाषाओं में बात कर सकता हूँ। जीवन के हर पहलू को लेकर मेरा नजरिया सकारात्मक हुआ है। दिन–ब–दिन अब मैं अपने आपको मानसिक और शारीरिक तौर पर ज्यादा शक्तिशाली होता महसूस करने लगा हूँ।

खेल ने मुझे कई नैतिक मूल्य भी सिखाए हैं। मेरे शुरुआती दिनों में, मैं एक गुस्सैल खिलाड़ी हुआ करता

था, हारने पर बिफर जाया करता था। सामने वाले की विजय को सराहना मुझे नहीं आता था, उल्टे मैं इस बात से चिढ़ जाता था कि उसने मुझे हरा दिया। किसी भी तरह की हार को कुबूलना मेरे लिए मुमकिन न था। अन्ततः मेरे कोच और मेरे घर वाले मुझे यह समझाने में सफल हुए कि हारना, खेल का एक हिस्सा है। सो खेल ने मुझे जो सबसे महत्वपूर्ण मूल्य दिया है, वह यह कि मैं विनम्र बनूँ और जीत और हार को निरपेक्ष ढंग से स्वीकार करूँ।

खेल ने मुझे अपनी दोस्तियाँ बनाने, बढ़ाने का मौका भी दिया है और मुझे एक विनम्र इनसान बनना सिखाया है।

अब मैं कड़ी मेहनत में विश्वास करने लगा हूँ ताकि मुस्कुराते हुए जिन्दगी का मजा ले सकूँ, हर वक्त, हर पल।

*भारत के एक उदीयमान गोल्फर के रूप में बंगलौर के **चिक्करंगप्पा** ने न केवल जूनियर गोल्फ सर्किट में अपनी धाक जमाई है, बल्कि एक प्रतिभाशाली अव्यवसायी, शौकिया गोल्फर के तौर पर अपनी एक खास जगह भी बनाई है। सन् 2010 में अखिल–भारतीय शौकिया गोल्फ चैम्पियनशिप जीतने वाले वे सबसे कम उम्र के गोल्फर बने। अखिल–भारतीय जूनियर खिताब भी उन्होंने जीता। इस तरह जूनियर और सीनियर, दोनों खिताब जीतने का गौरव पाने वाले वे अकेले खिलाड़ी बने। अपने उत्कृष्ट स्ट्रोकप्ले और अपनी विनम्रता के साथ चिक्का एक खेल सितारा बनने की ओर अग्रसर हैं।*